2 (15)

प्रश्न-1:→ (क) दाँतों का निर्माण चतुर कारीगर अर्थात ईश्वर ने किया है। उन्हीं के कारण हमारे दाँत मजबूत होते हैं। दाँतों की शोभा से सारी शोभा है क्योंकि यदि दाँत नहीं होंगे तो पोपला-सा मुँह निकल आएगा और चिबुक एवं नासिका एक में मिल जाएगी।

(ख) कवियों ने दाँतों की उपमा हीरा, मोती, माणिक से दी है। यह उपमा इसलिए दी गई है क्योंकि कवियों के अनुसार दाँत वह अंग है जिसमें पाकशास्त्र के छहों रस एवं काव्य शास्त्र के नवों रस का आधार है।

(ग) भोजन में दाँतों का बहुत बड़ा योगदान है। दाँतों के कारण ही हम भोजन को चबा सकते हैं अर्थात भोजन का रस एवं आनंद ले सकते हैं। इसे समझने के लिए किसी वृद्ध के पास जाना इसलिए आवश्यक है क्योंकि वृद्धों के पास दाँत नहीं होते। अतः एक वृद्ध ही दाँतों के महत्व के विषय में बता सकता है। वह बता सकता है कि दाँतों के बिना वह भोजन भी नहीं कर सकता।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(घ) जब तक दाँत अपने स्थान, अपनी जाति (दंतावली) और अपने काम में दृढ़ हैं, तभी तक दाँतों की प्रतिष्ठा है। मुख के बाहर होते ही दाँतों को एक अपावन, घृणित एवं फेंकने वाली हड्डी समझ लिया जाता है और उन्हें फेंक दिया जाता है। इस प्रकार दाँतों के साथ मुख से बाहर होते ही भिन्न व्यवहार किया जाता है।

(ङ) शंकराचार्य के कथन और एक अन्य कहावत के द्वारा लेखक हमें यह समझाना चाहता है जब तक दाँत हमारे मुख में होते हैं तब तक उनके साथ अच्छा व्यवहार होता है परन्तु जब दाँत मुख से बाहर हो जाते हैं तब उन्हें अपावन एवं फेंकने वाली हड्डी समझकर फेंक दिया जाता है।

(च) गाल और होंठ दाँतों को ढककर रखते हैं अर्थात वे दाँतों के परदे की तरह कार्य करते हैं।
उस परदे से कवि ने यह शिक्षा दी है — कि जिसके परदा न रहा अर्थात् स्वजातित्व की चौकीदारी न रही, उसकी निर्लज्ज जिंदगी व्यर्थ है। अर्थात जब तक दाँत

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

मुख के अंदर (परदे में) है तभी तक उनकी प्रतिष्ठा है। जब वे बाहर आ जाते हैं तब उनका कोई मूल्य नहीं।

(द) दाँतो की चर्चा में देश का अहित करने वालों का उल्लेख इसलिए किया गया है क्योंकि देश का अहित करने वाले लोग और कुछ नहीं बल्कि पीड़ा देते हैं एवं देश के लिए घातक होते हैं। कवि के अनुसार ऐसे लोगों से दूर ही रहना चाहिए।

(ज) शीर्षक → "दाँत – अमूल्य वरदान"

प्रश्न-२:→ (क) तन-मन अर्पित करने पर भी कुछ और देने की चाह इसलिए है क्योंकि भारती माता का हमारे ऊपर बहुत सा ऋण है।

(ख) मातृभूमि का ऋण चुकाने के लिए कवि कहता है

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

कि यदि वह थाल में सजाकर जब भाल लाए अर्थात जब भी मातृभूमि को समर्पित करे क' तो उसे स्वीकार कर लिया जाए। ।

(ग) तन और मन मातृभूमि को तभी समर्पित हो सकता है जब कोई जी-जान से धरती माता की सेवा करे एवं अपनी धरती के लिए बलिदान दे।

(घ) कविता में गाँव, दुवार, घर एवं आँगन से इसलिए क्षमा माँगी जा रही है क्योंकि कवि ने अपना घर छोड़कर देश का जयगान अधरों पर सजा लिया है एवं देश का ध्वज ही केवल कवि के हाथ में है।

(ङ) यहाँ चमन का अर्थ सिर (शीश) से है एवं नीड का अर्थ शरीर के एक-एक बूंद से है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

6

प्रश्न-5:→ (क) उलटा पिरामिड शैली में सबसे महत्वपूर्ण सूचना सबसे पहले दी जाती हैं एवं उसके बाद घटते हुए क्रम में सूचना लिखी जाती है।

5

(ख) वह रिपोर्ट जिसमें अन महत्वपूर्ण तथ्यों एवं जानकारियों को उजागर किया जाता है जो सार्वजनिक रूप से पहले उपलब्ध नहीं थे, उसे खोजी रिपोर्ट कहते हैं।

(ग) समाचार लिखने के छह ककारों के नाम हैं— क्या, कौन, कब, कहाँ, कैसे और क्यों।

(घ) प्रधान संपादक के दो कार्य :—

1. किसी विशेष विषय पर अपनी राय प्रकट करना अर्थात संपादकीय लिखना।
2. संपादक के नाम जो पत्र आते हैं उनको पढ़ना एवं अखबार में प्रकाशित करना।

(ङ) स्तंभ लेखन विचारपरक लेखन है। इसमें समसामयिक

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

मुद्दों पर लिखा जाता है एवं दर्शकों तक पहुँचाया जाता है।

प्रश्न-6:→ **'पर्यावरण से जुड़ा हमारा भविष्य'**

(5)

पर्यावरण अर्थात हमारे आस-पास का वातावरण। पहले पर्यावरण बहुत शुद्ध हुआ करता था। उस शुद्ध वातावरण में सभी लोग स्वस्थ रहते थे। लोगों को बीमारियों का शिकार भी नहीं होना पड़ता था। चारों-ओर चिड़िया एवं अन्य पक्षी खुशी से उड़ते थे एवं चहचहाते थे। चारों ओर पेड़-पौधे, जंगल आदि हुआ करते थे।

परन्तु आज के मानव ने पर्यावरण को हानि पहुँचाकर पर्यावरण की परिभाषा ही बदल दी है। आज पर्यावरण शुद्ध न होकर अशुद्ध हो गया है। आज हर जगह पेड़ों को काटा जा रहा है। मानव ने केवल अपनी सुविधा के लिए पेड़ों एवं जंगलों का कटान किया है एवं सभी कुछ नष्ट कर दिया

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

है। आज हमारा वातावरण शुद्ध नहीं है। मानव ने हर जगह फैक्ट्रियाँ आदि बनाकर दी है। उनके धुएँ से हमारा वातावरण अशुद्ध हो रहा है। लोग गंभीर बीमारियों का शिकार हो रहे हैं। आज लोग यह भूल गए हैं कि पर्यावरण हमारा भविष्य है। लोग यह भी भूल गए हैं कि यदि पर्यावरण को हम नष्ट कर देंगे तो पर्यावरण हमें नष्ट कर देगा।

अतः हमें यह समझना चाहिए कि पर्यावरण से ही हम लोग हैं। यदि पर्यावरण नहीं होगा तो हम भी नहीं होंगे। हमें अपने पर्यावरण को शुद्ध रखना होगा और इसके लिए हमें अधिक से अधिक पेड़ लगाने होंगे क्योंकि पेड़ हवा में से कार्बन-डाई-आक्साइड गैस को हटा देते हैं एवं वायु को शुद्ध करते हैं। यदि ऐसा होता है तभी हमारा भविष्य सुरक्षित रह सकेगा।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न - 7 :→ मुझ . . . . तर्पण !

सप्रसंग :→ प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक अंतरा (भाग - 2) में संकलित 'सरोज स्मृति' नामक पाठ से अवतरित हैं जिसके रचयिता विख्यात कवि श्री "सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'" जी हैं।

(8)

यहाँ कवि ने उस समय का वर्णन किया है जब उनकी पुत्री सरोज की मृत्यु हो जाती है एवं कवि बिलकुल अकेले व असहाय हो जाते हैं।

व्याख्या :→ कवि अपनी पुत्री सरोज के विषय में कहते हैं कि मुझ भाग्यहीन की तू ही एकमात्र सहारा थी। इतने वर्षों ~~बाद~~ अब तक मैंने तेरी स्मृतियों को अपने मन में संजोए रखा। मेरे जीवन में सदैव दुख ही रहा है। पहले तो मेरी पत्नी मुझे छोड़कर चली गई और अब तू (पुत्री) मुझे छोड़कर चली गई। कवि कहता है कि मैं आज वो कहूँगा जो मैंने आज तक नहीं कहा। मेरे उसी कर्म पर वज्रपात हो रहा है। मैं सदैव धर्म के साथ चलूँगा। कवि कहता है कि

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

यदि मुझे मेरे धर्म के मार्ग से कोई भी विचलित करेगा तो भी मैं अपने धर्म पर अडिग रहूँगा एवं इसी पथ पर मेरे कार्य सफल होंगे। जिस प्रकार बर्फ पड़ने से कमल भ्रष्ट हो जाता है। परन्तु मैं अपने धर्म पर अडिग रहूँगा। कवि अपनी ~~कर~~ कन्या के लिए कहता है कि मैंने आज तक जो भी अच्छे कार्य किए हैं। मैं उन्हें तुझे समर्पित करता हूँ और तुझे श्रद्धांजलि देता हूँ।

विशेष :→ यहाँ अपनी कन्या के प्रति पिता के प्रेम का मनोहारी चित्रण किया गया है।

2 कवि अपनी पुत्री को उनका एकमात्र सहारा बताता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न - 8 :→

(क) 'वसंत आया' कविता के कवि 'रघुवीर सहाय' जी की मुख्य चिंता यह है कि आज मनुष्य प्रकृति से दूर होता जा रहा है। वह प्रकृति से अपना संबंध तोड़ चुका है। मनुष्य को वसंत के आने का पता भी तब चलता है जब दफ्तर में वसंत पंचमी की छुट्टी होती है एवं कविताएँ पढ़ने से भी वसंत के आने का पता चलता है। आज मानव की जिंदगी घर से दफ्तर एवं दफ्तर से घर तक ही सीमित हो गई है। वह प्रकृति को अनुभव नहीं करता है। यही कवि की चिंता का विषय है।

(ग) 'भरत-राम के प्रेम' में भरत जी कहते हैं कि — "मैं जानऊँ निज नाथ सुभाऊ" अर्थात वे राम जी के स्वभाव को जानते हैं। वे श्री राम की निम्नलिखित विशेषताओं को बताते हैं —

1. श्री राम शत्रुओं पर भी क्रोध नहीं करते।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

2. वे बचपन मे भरत जी को हारा हुआ खेल भी जितवा दिया करते थे।
3. श्री राम ने कभी भरत जी का दिल नही पहुचाया।
4. वे किसी को ठेस नही पहुँचाते।
5. वे माता-पिता की आज्ञा का पालन करते हैं।

3

6

प्रश्न 1:→(ख) काव्य सौंदर्य:-

1. यहाँ नायिका का अपने पति तक भँवरे एवं कागा के द्वारा संदेश पहुँचाने का मनोहारी चित्रण किया गया है।
2. अलंकारों की छटा देखने को मिलती है।
3. नायिका की व्यथा का चित्रण देखने योग्य है।
4. तत्सम शब्दावली का प्रयोग है।
5. सरल, सहज एवं प्रवाहमयी काव्य-भाषा का प्रयोग किया गया है।
6. नायिका अपने पति क से विरह की वेदना मे है जिसका चित्रण किया गया है।

3

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(ग) काव्य सौंदर्य :→

1. यहाँ बनारस शहर का मानवीकरण किया गया है।
2. तत्सम शब्दावली का प्रयोग किया गया है।
3. सरल, सहज एवं प्रवाहमयी काव्य भाषा का प्रयोग किया गया है।
4. काव्य में प्रवाहमयता, संगीतात्मकता का गुण विद्यमान है।
5. बनारस शहर का जल में एक टाँग पर खड़ा होना एवं अलक्षित सूर्य को अर्घ्य देना। सभी का मनोहारी चित्रण किया गया है।
6. बिंब – विधान विद्यमान है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न - 10 :→ नाम ... में स्नात।

सप्रसंग :→ प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक अंतरा (भाग-2) में संकलित 'कुटज' नामक पाठ से अवतरित हैं जिसके लेखक 'श्री हजारी प्रसाद द्विवेदी' जी हैं।

(6)

यहाँ कुटज के विषय में बताया गया है इस नाम के विषय में बताया गया है। नाम को बड़ा माना गया है।

व्याख्या :→ कवि कहता है कि नाम बड़ा होता है। नाम को रूप से बड़ा माना गया है। कवि कहता है कि नाम इसलिए बड़ा होता है क्योंकि नाम सुनते ही रूप का स्मरण हो आता है। रूप नाम के बिना अधूरा है। नाम तो रूप के अभाव में भी अपना वजूद बनाए रखता है। नाम को सामाजिक स्वीकृति प्राप्त होती है। नाम वह होता है जिसपर समाज की मोहर लगी होती है। यदि हमें किसी का रूप ध्यान नहीं आता हो। नाम सुनते ही वह स्मरण हो

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

आता है। कवि के अनुसार नाम को सामाजिक स्वीकृति मान्यता प्राप्त होती है, नाम इतिहास द्वारा प्रमाणित होता है एवं उसे स्वीकार कर लिया जाता है।

विशेष :→ 1. यहाँ नाम की महिमा का वर्णन कि बहुत ही मनोहारी ढंग से किया गया है।
2. सरल एवं सहज शब्दों का प्रयोग किया गया है।

प्रश्न -11 :→ (क) जब उस बच्चे के उत्तरों से प्रसन्न होकर एक बूढ़ा व्यक्ति उस बच्चे से कुछ पुरस्कार माँगने के लिए कहता है तो सभी सोचते हैं कि वह बालक कोई पढ़ाई की किताब माँगेगा परन्तु वह बालक लड्डू माँगता है। इस उत्तर पर उस बालक के पिता निराश हो जाते हैं परन्तु कवि खुश हो जाता है। वह कहता है कि कम-से-कम एक प्रश्न का उत्तर तो इस बालक ने अपने मन से दिया है। अन्य प्रश्नों के

(8)

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

उत्तर तो उस बालक को स्वतः याद थे। कवि कहता है कि यह लड्डू माँगना एक जीवित वृक्ष के हरे पत्तों की पुकार का मधुर स्वर था न कि अलमारी की सिर दुखाने वाली खड़खड़ाहट।

4

(ख) 'संवदिया' के आधार पर हरगोबिन के चरित्र की बहुत सी विशेषताएँ उभरकर आती हैं। उनमें से कुछ विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. हरगोबिन से किसी का भी दुख देखा नहीं जाता है।
2. जब गाड़ी में वापस आने के लिए उसके पास पैसे नहीं होते तो वह जितने पैसे उसके पास थे उन्हीं से टिकट खरीदता है। वह आगे बिना टिकट के एक स्टेशन भी नहीं जाता अर्थात वह एक ईमानदार व्यक्ति है।
3. वह बड़ी बहुरिया के दुख को याद करते हुए खाना भी नहीं खाता।
4. हरगोबिन को बड़ी बहुरिया का दुख देखकर रात को नींद भी नहीं आती।

4

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न - 12 :-> (6)

विष्णु खरे
(सन् 1940)

जन्म :-> सन 1940 ई० में प्रसिद्ध कवि विष्णु खरे का जन्म छिंदवाड़ा, मध्य प्रदेश में हुआ था / क्रिश्चियन कॉलेज, इंदौर से उन्होंने अंग्रेजी में एम. ए. किया /

विष्णु खरे जी ने कई विद्यालयों में कार्य किया / वे उप सचिव पद पर भी पदासीन रहे / उन्होंने मध्यप्रदेश एवं दिल्ली के महाविद्यालयों में भी कार्य किया / उन्होंने कई विद्यालयों में अपना योगदान दिया / सबसे आखिर में उन्होंने जवाहरलाल नेहरू साहित्य में भी संपादक के पद पर कार्य किया /

साहित्यिक परिचय :- विष्णु खरे जी का काव्य प्रकाशन सन 1956 से शुरू हुआ /

उन्होंने कई काव्य संग्रह का सेरचन किया —

पहला — दी. एस. ऐलियट

दूसरा — एक गैर रूमानी समय में

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

तीसरा – खुद अपनी आँख से
चौथा – सबकी आवाज के पर्दे में
पाँचवा – चिड़िया बाकी
छठा – काल और अवधि के दरमियान

उन्हें अपने काव्य संग्रह के लिए कई सम्मानों से सम्मानित किया गया। उन्हें साहित्यकार पुरस्कार, रघुवीर सहाय पुरस्कार, मैथलीशरणगुप्त पुरस्कार आदि सम्मानों से सम्मानित किया गया।

काव्य भाषा – उनकी काव्य-भाषा सरल एवं सहज है। उन्होंने जीवन मूल्यों को अपने काव्य में उभारा है।
आज भी वे स्वतंत्र लेखन में लीन हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न-13:→ "तो हम भी सौ लाख बार बनाएँगे।" के आधार पर सूरदास के जीवन से प्राप्त होने वाले मूल्यों की चर्चा निम्नलिखित है —

(क) पुनर्निर्माण :- सूरदास के मन में पुनर्निर्माण की भावना है। उसे विश्वास है कि वह अपना घर दोबारा बना पाने में सक्षम होगा।

(ख) आत्मविश्वास :- सूरदास आत्मविश्वास से परिपूर्ण है। उसमें विश्वास की कमी नहीं है। वह सोचता है कि वह दोबारा से घर बनवाएगा और बहुत अच्छा बनवाएगा।

(ग) मेहनती स्वभाव :- सूरदास एक मेहनती व्यक्ति है। वह मेहनत करने से कभी पीछे नहीं हटता। वह जानता है कि भैरो ने उसके पैसे चुराए हैं। परन्तु वह मेहनती स्वभाव का है इसलिए वह भैरो को कुछ नहीं कहता और मेहनत करने में विश्वास रखता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न -14 (क) कवि कहता है कि 'बिसनाथ यह मान ही नहीं सकते कि बिस्कोहर से अच्छा कोई गाँव हो सकता है। उसके कारण निम्नलिखित हैं:—

10

1. बिस्कोहर की सुंदरता :— बिस्कोहर एक बहुत ही सुंदर गाँव है। वहाँ हर जगह फूल खिले रहते हैं। पर्यावरण बहुत स्वच्छ एवं सुंदर है। वहाँ पर सभी लोग स्वस्थ रहते हैं। चारों ओर का वातावरण अच्छा है। चारों ओर फूलों की गंध आती है।

2. बिस्कोहर की सुंदर नारी :— एक बार बिसनाथ अपने किसी रिश्तेदार के यहाँ गए थे। वहाँ उन्हें एक नारी मिली जो कि बहुत ही सुंदर थी। बिसनाथ को वह औरत ऐसी लगी जैसे — प्रकृति सजीव नारी बन गई। इसलिए बिसनाथ कहते हैं कि बिस्कोहर से अच्छा कोई गाँव नहीं है।

5

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(ख) पहाड़ों का जीवन विविध संघर्षों का जीवन है। इस कथन के समर्थन में निम्नलिखित कारण स्पष्ट है –

1. कठिन चढ़ाई → पहाड़ों का जीवन बहुत ही संघर्षमय होता है। वहाँ के लोगों को अपनी दिनचर्या के सामान जुटाने के लिए पहाड़ों के रास्तों से गुजरना पड़ता है।

2. ज्यादा बारिश होना या न होना :→ पहाड़ों पर कभी तो ज्यादा बारिश होती है कभी नहीं भी होती है। इसलिए पानी अभाव में लोगों को बहुत दूर चलकर जाना पड़ता है।

3. भूस्खलन का डर :– पहाड़ों पर कभी – भी भूकंप आ जाता है जिस कारण वहाँ के लोगों के प्राण मुसीबत में आ जाते हैं।
अर्थात हम कह सकते हैं कि पहाड़ों पर जिंदगी बहुत मुश्किल होती है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न -5:→ 291/02 बी - ब्लाक
(5) राम नगर
दिल्ली

02 अप्रैल, 2018

संपादक महोदय
टाईम्स ऑफ इंडिया
दिल्ली

विषय:→ राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान के लाभ और उसकी सीमाओं की समीक्षा

महोदय,

आपके सुपठित अखबार के माध्यम से मैं स्वच्छता अभियान के लाभों के विषय में अपने विचार प्रकट करना चाहती हूँ जिसके कारण पूरे देश को लाभ हुआ है।

मैं यह बताना चाहती हूँ कि जब से

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

मोदी जी ने स्वच्छता अभियान शुरु किया है तब से सभी जगह का वातावरण स्वच्छ होने लगा है। सभी ओर खुशहाली का वातावरण है। अब सभी सड़के साफ एवं स्वच्छ दिखाई देती हैं और इस कारण बीमारियों का खतरा भी कम होता जा रहा है। इसका सबसे बड़ा भाग सभी देशवासियों को हुआ है।

अंत मे मैं अपेक्षा करती हूँ कि मेरे विचार आपके समाचार-पत्र मे एक अच्छा स्थान प्राप्त करेंगे।

मैं आपकी सदा आभारी रहूँगी।

आपकी आज्ञाकारिणी
क० ख० ग०
(एक जिम्मेदार नागरिक)

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न-3 :->

(10)

लोकतंत्र और मीडिया

रूपरेखा :-> 1. प्रस्तावना , 2. मीडिया के लोकतंत्र मे लाभ 3. मीडिया की हानियाँ , 4. उपसंहार ।

मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है। जो कुछ लोकतंत्र मे घटित होता है वह सब मीडिया के द्वारा ही दर्शकों तक पहुचता है। लोकतंत्र मे चुनाव होने की खबरे , आदि सभी खबरे मीडिया द्वारा ही हम सभी लोग जान पाते है। अर्थात यदि मीडिया न हो तो शायद लोकतंत्र की खबरे , उनमे हो रहे चुनाव , लोकतंत्र मे उठ रहे सवाल आदि हम तक न पहुचे। मीडिया सभी खबरे हम तक जल्दी - जल्दी पहुचाती है। लोकतंत्र मे जन-हित के लिए किए जा रहे कार्यों एवं उसमे हो रहे घोटाले आदि को मीडिया द्वारा ही हम तक पहुचाया

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

जाता है।

मीडिया हमे हर अच्छे-बुरे कार्य जो कि लोकतंत्र मे होते हैं की खबर हम तक पहुँचाती है। जब चुनाव होते हैं तो किस पक्ष की क्या खूबियाँ एवं क्या खामियाँ है, वह सभी कुछ मीडिया द्वारा ही पता चलता है। हम यह कह सकते है कि मीडिया एक लोकतंत्र मे एक बहुत महत्वपूर्ण कार्य करती है। मीडिया के बल पर ही लोकतंत्र की कुर्सी थमी होती है। मीडिया ही लोकतंत्र को बुरे कार्य करने से बचाती है। अर्थात मीडिया के डर से ही लोकतंत्र सभी कार्य सही करने की कोशिश मे लगा रहता है। लोकतंत्र को डर होता है कि यदि उसने कोई गलत कार्य किया तो मीडिया द्वारा वह खबर दर्शकों तक अर्थात सभी लोगों एवं आम जनता तक पहुँच जाएगी। जहाँ पर भी जो कुछ भी हो रहा होता है, मीडिया वहीं पहुँच जाती है एवं पल-पल की खबर हम तक पहुँचाती है। इस प्रकार मीडिया बहुत महत्वपूर्ण होती है एवं अच्छे कार्य करती

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

है। अतः मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहना उचित ही है। मीडिया के ही कारण हम लोकतंत्र के विषय मे कि वहाँ क्या हो रहा है, सरकार कौन-कौन सी योजनाएँ बना रही है यह सब मीडिया द्वारा ही पता चलता है।

जहाँ मीडिया के इतने लाभ हैं वहाँ कुछ हानियाँ भी हैं। कहा भी गया है 'A coin has two sides' अर्थात एक सिक्के के दो पहलू होते हैं। मीडिया जहाँ इतने अच्छे कार्य करती है वहीं एक अभिशाप की भाँति भी कार्य करती है। मीडिया 'राई का पहाड़' बनाने मे सक्षम होती है। मीडिया एक छोटी सी बात को इतना बढ़ा-चढ़ाकर दिखाती है कि जिसका बखान करना संभव ही नहीं है। एक छोटी सी बात एक बड़े मुद्दे के रूप मे उठ जाती है और यह सब मीडिया के ही कारण होता है। मीडिया का सबसे भयानक रूप तब सामने आता है जब लोकतंत्र मे चुनाव होते हैं। मीडिया पैसे लेकर एवं भुगतान के आधार

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

पर चुनाव में खड़ी किसी एक पार्टी (पक्ष) के समर्थन में हम तक खबरें पहुँचाती है। वह एक पैसा लेकर कार्य करने वाले नौकर की भाँति हो जाता है। 'Media becomes paid' अर्थात वह भुगतान के आधार पर कार्य करती है। मीडिया इस प्रकार एक अभिशाप की तरह होती है। वह किसी एक पक्ष (पार्टी) के पक्ष में हो जाती है एवं उसी के पक्ष में खबरों का प्रसारण करती है। लोकतंत्र में मीडिया किसी एक पार्टी को मजबूत करती है एवं उसी से संबंधित खबरें भेजती है। जिस पक्ष को मीडिया मजबूत करना चाहती है, वह उस पक्ष की सभी खबरों को हम तक पहुँचाती है एवं उस पक्ष के प्रति हमारे मन के अच्छे विचार भर देती है। इस प्रकार मीडिया का सबसे भयानक, भयावह एवं गंदा रूप चुनावों के समय दिखता है जब वह भुगतान के आधार पर कार्य करने लग जाती है। वह हम तक उस एक पक्ष की विषय में बुरी खबरें भी पहुंचाने के स्थान पर उसकी अच्छाईयों को प्रसारित करती है। एक छोटी सी

बात को बढ़ाचढ़ा कर बताना तो मीडिया का गुण होता ही है। जहाँ मीडिया छोटी बात को बड़ा बना देती है वहीं वह बड़ी बात को दबा भी देती है और यह सब भुगतान के आधार पर होता है। इस प्रकार मीडिया बुरी भी होती है। किसी एक पक्ष के समर्थन में कार्य करना मीडिया का काम है। जहाँ वह पैसे लेकर किसी एक पक्ष का समर्थन करती है, वहीं दूसरी ओर वह भुगतान के आधार पर किसी दूसरे पक्ष को गिरा भी देती है। अर्थात उसकी खामियाँ प्रसारित करती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मीडिया अच्छी भी होती है एवं बुरी भी होती है।

आज मीडिया का स्थान लोकतंत्र में बहुत ज्यादा ऊँचा है एवं बढ़ भी गया है। मीडिया को किसी एक पक्ष के लिए कार्य नहीं करना चाहिए अपितु उसे अपना कार्य ठीक से करना चाहिए एवं पूरे देशवासियों को सही-सही

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

खबर पहुँचानी चाहिए। उसे अपना भयानक रूप नहीं दिखाना चाहिए एवं अपना कार्य दृढ़ता से एवं ईमानदारी के साथ करना चाहिए। यदि ऐसा होता है तभी हमारा ~~देश~~ देश घोटाले से रहित होगा एवं तरक्की की ओर अग्रसर होगा।

100

Hundred only

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in